मधुवन ओम् शान्ति अंक 257 दिसम्बर 2013

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स बहिनें तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र
(12-11-13)

प्राणप्यारे अव्यक्त मूर्त मात पिता बापदादा के अति लाडले, सदा अपनी श्रेष्ठ वृत्तियों द्वारा वृत्तियों का परिवर्तन करने वाले, एक बल एक भरोसे के आधार पर सदा सफलता मूर्त बनने वाले, निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - बापदादा के बताये हुए होमवर्क अनुसार अब अपनी शुभ श्रेष्ठ वृत्ति द्वारा वृत्तियों को परिवर्तन करने की सेवा फास्ट गति से करनी है। बाबा कहते बच्चे, वर्तमान वायुमण्डल प्रमाण मन्सा शक्ति द्वारा सकाश देने की सेवा करो। स्व-स्थिति और सेवा दोनों में स्पीड तेज करो। तो बोलो, बापदादा के इशारों प्रमाण सभी अपनी चित्त वृत्ति को बहुत साफ स्वच्छ रख ऐसी सेवायें कर रहे हो ना! कोई भी पुरानी बीती बातें दिल व चित्त में बैठी हुई न हों! जब हमारी वृत्तियां शुद्ध, शान्त और सच्चाई वाली होंगी तब वृत्ति से स्मृति बनेगी। वृत्ति वा स्मृति का कनेक्शन बुद्धि से है, उसमें सूक्ष्म में भी इगो न हो। ब्राह्मण जीवन में इगो (अहंकार) बहुत नुकसान करता है, वह स्वमान में रहने नहीं देता, सम्मान देने नहीं देता लेकिन बाबा का हम बच्चों प्रति फरमान है **'' बच्चे सदा स्वमान में रहो, सबको सम्मान दो''**। तो चेक करके अपने आपको चेंज करना है। अब हमारी वृत्ति ऐसी हो जो आत्माओं को खींचे, वायुमण्डल को पावरफुल बनाये क्योंकि जैसी बातें सोचते करते हैं ऐसा वायुमण्डल बनता है। तो बाबा की जो हम बच्चों के प्रति प्रेरणा है वही मेरी वृत्ति में हो, वही मुझे करना है। सूक्ष्म मेरी वृत्ति पर किसी का भी प्रभाव न हो। किसी के लिए ग्लानी भी न हो। सबके साथ रूहानी स्नेह भरा संबंध हो, याद में स्नेह और सच्चाई हो। वृत्ति में सत्य को समाने से दूसरी सब बातें समाप्त हो जाती हैं। जो ड्रामा में सीन सामने आई, पास हो गई, उसका चिंतन न चले। सदा निश्चयबुद्धि, निश्चिंत स्थिति रहे। बाबा अभी हम बच्चों को ऐसी पालना और पढ़ाई देकर अनुभवी मूर्त बना रहा है।

जैसे बाबा प्यार का सागर है ऐसे हम बच्चों को भी कहता है बच्चे आप भी ऐसे मास्टर सागर बनो। आपके चेहरे और चलन से ऐसी खैंच हो जो लोगों में सुनने की इच्छा जागृत हो। बाकी ड्रामा की हर सीन साक्षी होकर देखने से लगता है कि बाबा हम बच्चों को विजयी रत्नों में आने के अधिकारी बना रहा है। कभी कोई व्यर्थ संकल्प आता ही नहीं। समर्थ संकल्पों की कमाल है, जो श्रेष्ठ शुद्ध संकल्प की शक्ति से नई दुनिया बन रही है। बाबा ने हम बच्चों को सच्चाई, सफाई, सादगी से जीना सिखाया है। श्रेष्ठ चिंतन है, अच्छा संग है, सेवा की भावना है। बुद्धि पर कभी कोई बात का इम्प्रेशन नहीं बैठता इसलिए डिप्रेशन आ नहीं सकता। चेहरा मुरझा नहीं सकता। चित्त में सच्चाई है तो धैयता और नम्रता का गुण स्वत: आ जाता है। तो आज मैं आप सबको 5 बातों की सौगात दे रही हूँ, इसे सदा अपने साथ रखना - 1- पवित्रता 2- सत्यता 3- धैर्यता 4- नम्रता और 5- मधुरता। प्लीज़ इसमें एक भी चीज़ को भूल नहीं जाना, एक भी मिस हो गई तो प्युरिटी में कमी आ जायेगी।

बाकी मधुबन बेहद घर में तो अभी सम्मुख में अव्यक्त मिलन मनाने की सीज़न शुरू हो गई है। यह भी संगमयुग पर हम ब्राह्मण बच्चों का ही भाग्य है जो डायरेक्ट परमात्म पालना में पलते, नज़र से निहाल होते, वरदानों से अपनी झोली भर रहे हैं।

अच्छा - सभी को बहुत-बहुत याद

ईश्वरीय सेवा में,
बी.के. जानकी

ये अव्यक्त इशारे

रिगार्ड देने का रिकॉर्ड अच्छे से अच्छा बनाओ

1) अपने रिकार्ड को ठीक रखने के लिए सर्व को रिगार्ड दो। जितना जो सर्व को रिगार्ड देता है उतना ही अपना रिकार्ड ठीक रख सकता है। दूसरे का रिगार्ड रखना अपना रिकार्ड बनाना है। अगर रिगार्ड कम देते हैं तो अपने रिकार्ड में कमी करते हैं।

2) जैसे यज्ञ के मददगार बनना ही मदद लेना है वैसे रिगार्ड देना ही रिगार्ड लेना है। एक बार देना अनेक बार लेने के हकदार बन जाते हैं। जैसे कहते हैं छोटों को प्यार और बड़ों को रिगार्ड दो लेकिन सभी को बड़ा समझ रिगार्ड देना, यही सर्व के स्नेह को प्राप्त करने का साधन है।

3) यदि आपको कोई का विचार जंचता नहीं है तो भी उनके विचारों को फौरन ठुकराना नहीं चाहिए। पहले उनको रिगार्ड दो कि हां, क्यों नहीं। बहुत अच्छा। जिससे उनके विचार का फोर्स कम हो जाए। फिर आप जो उन्हें समझायेंगे वह समझ सकेंगे। अगर सीधा ही उनको कट करेंगे तो दोनों फोर्स टक्कर खायेंगी और रिजल्ट में सफलता नहीं निकलेगी इसलिए एक दो के विचार अर्थात् राय को पहले रिगार्ड देना आवश्यक है इससे ही आपस में स्नेह और संगठन मजबूत होगा।

4) जो नम्रचित्त होते हैं वह झुकते हैं, जितना अभी संस्कारों में, संकल्पों में झुकेंगे उतना विश्व आपके आगे झुकेगी। झुकना अर्थात् झुकाना। यह संकल्प न हो कि दूसरे भी हमारे आगे कुछ तो झुकें! लेकिन हम झुकेंगे तो सभी झुकेंगे। जो सच्चे सेवाधारी होते हैं वह जब सभी के आगे झुकते हैं तब तो सेवा कर सकते हैं। आगे बढ़ते हुए भी आगे बढ़ाने वालों का रिगार्ड जरूर देना है।

5) सभी बेहद बुद्धि वाले, बेहद के मालिक और फिर बालक हो। सिर्फ मालिक नहीं बनना है। बालक सो मालिक, मालिक सो बालक। एक दो की हर राय को रिगार्ड देना है। चाहे छोटा है वा बड़ा है, चाहे आने वाला स्टूडेन्ट है, चाहे रहने वाला साथी है, हरेक की राय को रिगार्ड जरुर देना चाहिए। पहले से ही कट नहीं करो कि यह रांग है, यह नहीं हो सकता। यह उसकी राय का डिसरिगार्ड है, इससे फिर उनमें भी डिसरिगार्ड का बीज पड़ता है, इसलिए पहले उसकी राय को रिगार्ड दो फिर समय देखकर समझानी देनी है तो जरूर दो, लेकिन तुरन्त कट नहीं करो।

6) व्यर्थ को कट भी करना हो तो पहले उनको रिगार्ड दो। फिर उसको कट करना नहीं तो समझेंगे हमको श्रीमत मिल रही है। रिगार्ड दे आगे बढ़ाने में वह खुश हो जायेंगे। किसको खुश करके फिर कोई काम भी निकालना सहज होता है। एक दो की बात को कभी कट नहीं करना चाहिए। हां, क्यों नहीं, बहुत अच्छा है, यह शब्द भी रिगार्ड के हैं। पहले ना की तो नास्तिक हो जायेंगे। बापदादा भी किसको शिक्षा देते हैं तो पहले स्वमान याद दिलाकर फिर शिक्षा देते हैं।

7) आजकल जो भी आते हैं उन्हें मान जरूर चाहिए क्योंकि सब जगह से ठुकराये हुए हैं, इसलिये आप कभी भी किसी का डिसरिगार्ड नहीं करो। पहले उनकी विशेषता का वर्णन करो, फिर कमजोरी पर ध्यान खिंचवाओ। जैसे ऑपरेशन करते हैं तो पहले इंजेक्शन आदि से सुध-बुध भुलाते हैं। तो पहले रिगार्ड देकर उस नशे में उसको ठहराओ फिर कितना भी आपरेशन करेंगे तो आपरेशन सक्सेस होगा।

8) बापदादा को सबके वायदे याद रहते हैं लेकिन बापदादा बच्चों का डिसरिगार्ड नहीं करते। सामने बैठ कहे कि वायदा नहीं निभाया, यह भी डिसरिगार्ड है। जब सिर का ताज बना रहे हैं, स्वयं से भी आगे रख रहे हैं, तो ऐसी आत्मा का डिसरिगार्ड कैसे करेंगे? इसलिए मुस्कराते हैं। ऐसे नहीं कि याद नहीं रहता है।

9) ऐसे नहीं समझो कि हम तो सदैव झुकते ही रहते हैं लेकिन हमारा कोई मान नहीं, जो झुकते नहीं व झूठ बोलते हैं उनका ही मान है–नहीं। यह अल्पकाल का है, लेकिन आप दूरांदेशी बुद्धि रखो, यहाँ जितनों के आगे झुकेंगे अर्थात् नम्रता के गुण को धारण करेंगे, तो सारा कल्प ही सर्व आत्मायें आगे आगे नमन करेंगी। सतयुग त्रेता में राजा के रिगार्ड से काँध से नहीं लेकिन मन से झुकेंगे और द्वापर कलियुग में काँध झुकायेंगे।

10) बापदादा बच्चों के रिगार्ड का रिकार्ड देखते हैं। यह रिगार्ड देना भी ब्राह्मण जीवन में चढ़ती कला का साधन है। जो रिगार्ड देते हैं वही विशेष आत्मा वर्तमान समय और जन्म जन्मान्तर भी अन्य आत्माओं द्वारा रिगार्ड लेने के पात्र बनते हैं। बापदादा ने भी साकार सृष्टि पर पार्ट बजाते पहले बच्चों को रिगार्ड दिया। बच्चों को स्वयं से भी श्रेष्ठ मानकर बच्चों के आगे समर्पण हुआ। पहले बच्चे पीछे बाप, बच्चे सिर के ताज हैं। बच्चे ही डबल पूज्य बनते – बच्चे ही बाप को प्रत्यक्ष करने के निमित्त बनते हैं। तो जैसे बाप ने सबका रिगार्ड रखा – ऐसे फॉलो फादर।

11) एक बाप से सर्व सम्बन्धों का नाता निभाना ही बाप का रिगार्ड रखना है। रिगार्ड रखना अर्थात् एक बाप दूसरा न कोई – बाप ने कहा और बच्चे ने किया। कदम के ऊपर कदम रख चलना। मनमत वा परमत बुद्धि द्वारा ऐसे समाप्त हो जाए जैसे कोई चीज़ होती ही नहीं। सिर्फ एक ही श्रीमत बुद्धि में हो। सुनो तो भी बाप से, बोलो तो भी बाप का, देखो तो भी बाप को, चलो तो भी बाप के साथ, सोचो तो भी बाप की बातें सोचो, करो तो भी बाप के सुनाये हुए श्रेष्ठ कर्म करो। इसको कहा जाता है बाप के रिगार्ड का रिकार्ड।

12) किसी की भी कमजोरी वा अवगुण को अपनी कमजोरी वा

अवगुण समझ वर्णन करने के बजाए वा फैलाने के बजाए समाना और परिवर्तन करना - यह है रिगार्ड। किसी की भी कमजोरी की बड़ी बात को छोटा करना, पहाड़ को राई बनाना चाहिए, न कि राई को पहाड़। इसको कहा जाता है रिगार्ड। दिलशिकस्त को शक्तिवान बनाना, सदा उमंग-उल्लास में लाना इसको कहा जाता है रिगार्ड।

13) रिगार्ड देना ही लेना हो जाता है। एक देना और दस पाना है। इस मंत्र से सदा सहज सेवा की वृद्धि होती रहती है। यह सदा याद रखो - सिर्फ रिगार्ड लेने से नहीं मिलेगा, लेकिन देने से मिलेगा। रिगार्ड देने से एक दो में स्नेह और युनिटी अच्छी रहेगी।

14) सभी ने यज्ञ सेवा की जिम्मेवारी का बीड़ा तो उठा लिया है। अभी सिर्फ हम सब एक हैं, हम सबका काम एक है, प्रैक्टिकल दिखाई दे। अभी रिगार्ड देने का रिकार्ड चारों ओर बजना चाहिए। अभी चारों ओर इसी रिकार्ड की आवश्यकता है।

15) कोई कैसा भी हो लेकिन आप दाता बन देते जाओ। रिटर्न दे वा न दे लेकिन आप देते जाओ, इसमें निष्काम बनो। मैंने इतना दिया, उसने तो कुछ दिया नही। हमने सौ बार दिया, उसने एक बार भी नहीं। इसमें निष्काम बनो तो परिवार स्वत: ही सन्तुष्ट होगा।

16) कई बच्चे सोचते हैं कि हम तो आगे बढ़ रहे हैं लेकिन दूसरे हमको आगे बढ़ने का रिगार्ड नहीं देते हैं। इसका कारण - सदा स्वयं अपने रिगार्ड में नहीं रहते हो। जो अपने रिगार्ड में रहते वह रिगार्ड माँगते नहीं स्वत: मिलता है। अगर मूर्ति अपने आसन को छोड़ दे या उसे जमीन में रख दें तो उसकी क्या वैल्यु होगी! मूर्ति को मन्दिर में रखें तो सब महान रूप में देखेंगे। तो सदा महान स्थान पर अर्थात् ऊंची स्थिति पर रहो, नीचे नहीं आओ तो सभी रिगार्ड देंगे।

शिवबाबा याद है ? 2-3-12 *ओम् शान्ति* *मधुबन*

''सबको सब कुछ देने वाली धरती माँ है, इस पर कोई पाप कर्म नहीं करो''

(दादी जानकी)

ओम् शान्ति स्वयं की, बाप की, घर की याद दिलाती है। शिवबाबा परमधाम से हमको ले जाने के लिये आया है, तो अपनी याद के साथ घर की याद भी दिलाता है। यहाँ धरती पर पार्ट बजाने लिये आये हैं, धरती माता है। धरती माँ है, धरती अन्न भी देती है, फ्रूट भी देती है, पानी भी देती है, फल भी देती है, फूल भी देती है। कितनी अच्छी माँ है। धरती माँ न होती तो हम क्या करते? कहाँ सोते, कहाँ बैठते? तो कौन खिलाता है? धरती माँ। शारीरिक माँ क्या खिलायेगी! कितना खिलायेगी! पर धरती पर ही खिलायेगी। खटिया तो धरती पर ही होगी। घर भी धरती पर होगा। अन्न, पानी भी धरती से मिलेगा। यह फूल भी धरती से ही मिलेगा। ऐसी धरती माँ तो हमको सब देने वाली, वहाँ हम पाप कर्म करें? कान पकड़ो अपना। यहाँ धरती माँ हमको खिलावे, पिलावे, बिठावे, सुलावे वहाँ बैठ हम पाप कर्म करें! यह फिर बाबा ने बताया वो मेरी माँ अति मीठी माँ परमात्मा माँ के रूप में एडाप्ट करके, बाप रूप से अपना बनाके बैठके सिखाया, समझाया.. यह क्या करते हो? तुम कौन हो? किसके बच्चे हो? कर क्या रहे हो? पहले अन्धे थे इसलिए दर दर धक्के खाते थे, अब आंख खुली तो त्रिनेत्री बन गये। धरती पर रहते थे, पर अपने घर और असली माँ बाप को भूल गये। अन्तिम जन्म में वो माँ बाप कर्मों अनुसार मिले, वो तो पूरा हुआ। अभी अलौकिक माँ, पारलौकिक बाप दोनों जो आपस में मिले हैं। भले आज बाबा ने कहा दलाल से योग नहीं लगाना, पर दलाल के बिगर वो मिलता कैसे!

आत्मा परमात्मा अलग रहे बहुकाल, सुन्दर मेला कर दिया जब सतगुरू मिला दलाल। जैसे दलाल कमाता है हमको भी कमाई करना सिखाता है। संगमयुग में आत्मा, परमात्मा का मिलन होने के बाद पुरानी दुनिया को भूल नई दुनिया में आने के लिये श्रेष्ठ कर्म करना है। बाबा आजकल मन्सा सेवा पर ध्यान खिंचवा रहा है, भले वाचा सेवा की है, अच्छा है। जिन्होंने कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्मणा से यज्ञ सेवा की है, अपनी हड्डियां दी हैं। इसमें उदाहरण भोली दादी को दिल से पुण्य का काम करते हुए देखा, सदा ही सेवा में तत्पर रहती थी। यज्ञ सेवा की महिमा अपरम्पार है। हम गोप-गोपियों को बाबा की मुरली मिली तो सब कुछ मिला। तो मुरली में जादू है ना। जो जीते जी मरे हैं, वो इस बात को अच्छी तरह से समझेंगे। कईयों को चिंता होती है कि मैं बुढ़ा हो जाऊं, बीमार हो जाऊं, कुछ हो जाये तो मेरे को कौन सम्भालेगा? हमको तो कभी ऐसा ख्याल नहीं आया क्योंकि बाबा सम्भालेगा यह विश्वास है, प्रैक्टिकल है। भाग्यविधाता ब्रह्मा बाबा, शिवबाबा है वरदाता, कल्याणकारी है तो मैं कौन? सौभाग्यशाली कहें, पदमापदम भाग्यशाली कहें। हर कदम में सी फादर फॉलो फादर। ब्रह्मा बाबा कहेगा शिवबाबा को याद कर, शिवबाबा कहेगा ब्रह्मा बाबा को फॉलो कर। ब्रह्मा बाबा कौन है? त्यागी, तपस्वी, विश्व सेवाधारी – इन तीन रूपों को तीन मुख के रूप में ब्रह्मा को दिखाते हैं।

लक्षण लक्ष्मी जैसे, करनी नारायण जैसी हो। बाबा जो लक्ष्य देता है उसे लक्षण के रूप में धारण करो, लक्ष्य स्वरूप बनो। तो

एक मन बुद्धि बाबा में लगानी है फिर लक्ष्मी-नारायण जैसा बनना है। तो कर्म में गुण चाहिए, कर्म सम्बन्ध में आयेगा। विकारों पर जीत पहनकर सम्पूर्ण निर्विकारी बनना है। सर्वगुण सम्पन्न, सभी गुण मेरे में हों, एक भी अवगुण न हो, उसके लिये एक विधि है, बाबा को याद करना है, देह सहित सबको भुलाना है। मैं आत्मा हूँ, बाबा की हूँ। बाबा से शक्ति ले रहे हैं, जिससे विकार सारे निकल गये हैं या निकल रहे हैं। पहले आत्मा जब विकारों वश थी तो जैसे जेल में पड़े हुए थे, जैसे विकार चलावें वैसे चलते थे। बाबा ने हमको सिरमाथे पर बिठाके जेल से निकाला है। अभी सिर्फ खुद शान्त नहीं रहो लेकिन जो आपके संग में आवें वो भी ऐसा ही बन जायें। तो हमारे पहरेदार कौन हैं? श्रेष्ठ संकल्प, दृढ़ संकल्प। अच्छा।

2) ''श्रेष्ठ कर्म का खाता, दुआओं का खाता और पुण्य का खाता जमा करते चलो''

कहाँ कहाँ से बाबा के बच्चे ईश्वरीय आकर्षण में सब कुछ भूल बाबा के घर पहुँच जाते हैं, बाबा के घर की आकर्षण सब बातों को भुला देती है। बाबा कहते सब कुछ भूल मेरे को याद करेंगे तो मैं प्यार करूँगा। जो कहीं से नहीं पाया वो बाबा से पाया। मन सभी जगहों से निकाल अपने से लगवा लिया, तो मन शान्त हो गया। प्रभु मिलन से मन को शान्ति आ गई, दिल को खुशी आ गई। अब जी नहीं चाहता पीछे मुड़के देखें क्योंकि जिसको याद करते थे वो मेरे सामने बैठा है, मैं उसके सामने बैठी हूँ।

पहले तो अपने को दु:ख देते थे, औरों को भी दु:ख देते थे, कभी अपने को प्यार नहीं करते थे। कोई बहुत दु:खी होते हैं तो वो खुद को ही मारते हैं। ऐसे कई मिसाल सुने होंगे, दु:खी हो करके अपने को फांसी पर लटकाके खलास कर दिया। तो दु:ख देना, दु:ख लेना इसके सिवाए और कोई काम आता ही नहीं है लोगों को। बाबा ने इससे हमें छुड़ा दिया, बच्चे न दु:ख देना, न लेना। दुआयें देना दुआयें लेना। ऐसे कर्म करो जो हरेक के दिल से दुआ निकलें। श्रेष्ठ कर्म का खाता जमा करना है क्योंकि साथ वही चलेगा। श्रेष्ठ कर्म का खाता जितना भगवान कराये उतना करते जाना है, जमा होता जाये। दूसरा है दुआओं का खाता कर्म ऐसे करो जो अनेकों की दुआ मिलें। तीसरा है पुण्य कर्म का खाता - दु:खियों का दु:ख दूर करो तेरा दु:ख दूर करेगा राम। आजकल संसार में दु:खियों का दु:ख दूर नहीं करते, सुखियों का सुख देख सहन नहीं करते। दु:खी को पूछते नहीं हैं, सुखी को सहन नहीं करते हैं। अभी इस बात में हमको अपने आपमें परिवर्तन लाना है। अचानक किसी को आधी रात में भी तकलीफ में देखा तो फौरन मदद करो। और कुछ न करो तो यह तो करो। केन आई हेल्प यू। दुनिया में अन्धकार बहुत है, चलते-फिरते, खाते-पीते एक है परमपिता की याद, दूसरी है सेवा। हर एक ऊपर बताये हुए तीन खाते जमा करो।

जितना दूसरों का भला करो तो मेरा भला भगवान करता है। कभी चिंता नहीं, कभी फिकर नहीं। मनुष्यों को दु:ख, चिंता और भय है, हमारे पास यह नहीं है। हरेक अपने से पूछे दु:ख, चिंता, भय मेरे पास है? है तो हिम्मत, विश्वास और सच्चाई से उसको मिटाओ और मुक्त रहो - यह समझने की बात है। जैसे आयु बढ़ती है तो उसी अनुसार चलना फिरना हो जाता है। इसमें आपेही हिम्मत, विश्वास और सच्चाई काम करती है। अपने जीवन में सच्चाई, सफाई, सादगी कोई फैशन नहीं है, सिर्फ बैज पहनते हैं। कौन हूँ? क्या बन रही हूँ? कौन बना रहा हूँ? प्रभु है तो सब कुछ है, प्रैक्टिकल प्रमाण है इसलिए चिंता नहीं करो। दुनिया में पैसा और पोजीशन के अलावा किसी की वैल्यु ही नहीं है। मोह माया वाला जीवन, चिंता वाला जीवन है। तो कर्म बड़े बलवान हैं, कैसे? परमात्मा सर्वशक्तिवान है। वो कहता है कि पहले के जो कर्म उल्टे हैं उसे तो मैं माफ कर दूँगा लेकिन अभी मेरे बच्चे बने हो तो अब अच्छे कर्म करो। हमने तो मोह छोड़ दिया पर औरों का भी मेरे में मोह न होवे तब खुशी होगी। अगर किसी को खुशी चाहिए तो न हमारा किसी में मोह हो, न किसी का हमारे में मोह हो। वो बाबा को याद करे, हमें क्यों याद करे। कुछ भी कोई भी चीज़ मेरी नहीं, यह है त्याग वृत्ति। कोई भी मेरा है तो भगवान जो दे रहा है वो ले नहीं सकेंगे। जैसे एक म्यान में दो तलवार नहीं ठहर सकती। आप कहें यह भी मिले वह भी मिले। भगवान का भी सुख मिले, संसार का भी सुख मिले, ऐसे नहीं हो सकता है। इसके लिये बाबा कहते छोड़ो तो छूटेंगे।

जब बाबा के घर को और बाबा को अपना समझते हैं तो दुनिया पराई लगने लगती है। यह अपना है वो पराया है। पराये की चीज़ को अपना समझना तो वो हुए चोर। बाबा को अपना समझना तो वो हुए सच्चे। अच्छा।

3) ''आपस में मदरली और फ्रैन्डली लॅव रखो तो शत्रुता का भाव समाप्त हो जायेगा''

जहाँ सच्चाई है वहाँ डर नहीं है, जहाँ झूठ है वहाँ डर है। आज बाहर की दुनिया में सच बोलने से डरते हैं इसलिए छोटे-बड़े सब झूठ ही झूठ बोलते रहते हैं। पति-पत्नि भी झूठ बोलते हैं, एक दो से डरते हैं और हम बाबा के संग से, सत्य बनने से निर्भय हो गये हैं इसलिए किसी से हमारा वैर नहीं है तो निर्भय और निर्वैर हो गये हैं। बाबा कहते ऐसे ही एक दो का भला करने के लिये और कोई बात दिल में न हो, मन में न हो - यही सच्चाई है, तभी एक दो के प्रति मित्रता भाव रहेगा। जैसे माँ होती है बच्चे का दु:ख नहीं सहन कर सकती है, कुछ भी थोड़ा तकलीफ होगा तो उसे ठीक करने में लग जायेगी, अपने को कुछ बीमारी है तो उस घड़ी वो भूल जायेगी, बच्चे की बीमारी में अपनी बीमारी भूल जायेगी, उसकी सेवा करेगी वो है माँ। तो ब्रह्मा बाबा ने भी माँ के रूप में हमारी पालना की है। अपने अन्दर से पुरुषार्थ में अशरीरी बनने का, बाबा को साथी बनाने का और हमको बाबा के साथ दिलाने का बहुत काम किया है।

अगर मेरे अन्दर शत्रुता भाव है तो दूसरे शत्रु बनते हैं। अगर मेरे अन्दर मित्रता भाव है, कैसी भी आत्मा है पर मेरी भावना में

मित्रता भाव है, एक मदरली लव, दूसरा फ्रैंडली लव यह हमारे संस्कारों में आ जाना चाहिए क्योंकि हमारा बाबा, शिवबाबा गाया हुआ है कल्याणकारी, शिव भोलानाथ, वरदाता है। हम उसके बच्चे हैं, तो जैसा बाप वैसे बच्चे होने से बच्चे में वो संस्कार पड़ जाते हैं। अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो तो तुम्हारे किये हुए पाप नाश कर दूँगा, हम जितना याद करते आ रहे हैं, हमारे पूर्व जन्मों के पाप नाश हो गये हैं, यह अनुभव है। फिर इस जन्म में भी, बाबा का बनने के बाद भी जो भूल चूक की है वो भी अगर सच बताते हैं तो माफ कर देता है। एक पहले के माफ कर देता, दूसरा अभी के क्षमा कर देता है, ऐसा भोलानाथ बाबा सारे कल्प में फिर कभी नहीं मिलेगा।

अन्तर्मुखी होके बाबा की याद से सबके गुणों को देखेंगे तो अपने अवगुण अपने आप समाप्त हो जायेंगे। आज के संसार में अगर अच्छा बनना हो तो हंस मिसल बनो। हंस और कुछ देखता ही नहीं है, कहाँ जाता ही नहीं है। हंस की विशेषता है कि वो उड़ना भी जानता है, पानी में तैरना भी जानता है। ऐसे और कोई पंछी में ताकत नहीं है। तो बाबा हमको संसार में रहते ऐसे न्यारा भी बनाता है तो प्यारा भी बनाता है। अभी-अभी संसार से न्यारे हैं, कोई पानी का छींटा भी नहीं पड़ सकता क्योंकि कमलफूल समान न्यारे हैं। फिर उड़ करके बाबा के पास चले गये वतन में क्योंकि बाबा परमधाम में रहने वाला है। हम जितना न्यारा बनते हैं, उतना परमात्मा प्यार देता है। जितना प्यार मिलता है उतना न्यारा बनने की शक्ति आती है। दुनिया में रहते कोई बन्धन कोई को न खींचे, न आकर्षित करे, ऐसे जितना न्यारा बनते उतना ही सबका प्यारा बनते। इससे आप सदा सुखी रहेंगे, आप सुखी तो सारा जहान सुखी।

12-7-13

"बाबा को अपना साथी बनाओ, साक्षी होकर सबके साथ पार्ट बजाओ तो कभी तंग नहीं होंगे"

- गुल्जार दादी

टीचर्स को देख करके सभी को तो क्या बाबा को भी बहुत खुशी होती है। आप बाबा की खुशी देख रही हैं! टीचर्स को देखकर बाबा कितने खुश हो रहे हैं और बाबा तो कहता है कि टीचर्स मेरे समान हैं क्योंकि मैं भी सेवा करता हूँ और टीचर्स भी सेवा करती हैं। तो मेरे समान यह कर्तव्य करने वाली निमित्त बहनें हैं। बाबा को तो टीचर्स का इतना रिगार्ड है, मैं तो कहती हूँ कि भगवान इतना रिगार्ड रखे, यह तो स्वप्न में भी नहीं था लेकिन अभी प्रैक्टिकल में देख रहे हैं। तो भगवान को टीचर्स का कितना रिगार्ड है। आप समझती हो इतना रिगार्ड है! जिस तरह भगवान हमारा रखता है। कहता है मेरे समान हो, जैसे मैं सेवाधारी हूँ वैसे आप भी सेवाधारी हैं और कितनी सैलवेशन मिली है। दुनिया की आवाज़ से परे, सेन्टर का स्थान मिला है। और उस स्थान पर सुखी होके खुश होके रह रही हैं। रहने का ठिकाना भी अच्छा, बुद्धि का ठिकाना भी अच्छा क्योंकि और कोई काम नहीं, एक ही काम है जो आया है उसको सैलवेशन देके बाबा का बनाना है, बस। तो बताओ टीचर्स, इसी काम में बिजी हो ना? कांध हिला रहे हैं, दिखाई देता है। दूर से ऐसे ही लगता है जैसे सन्मुख बैठे हैं देखो, साइंस के साधनों ने हमको दूर से नजदीक कर दिया। सभी देख रहे हैं ना, जैसे सामने बैठे हैं, हाँ हाथ हिलाओ।

कुमारियाँ भी सबकी प्यारी हैं, टीचर को तो बाबा कहता है मेरे समान हो, जो मेरा काम है वही टीचर्स का काम है। बताओ बाबा का कितना प्यार है टीचर्स से, आपको भी इतना प्यार है ना बाबा से? बाबा कहता है कोई भी कैसा भी साथी मिला है लेकिन साथ में किसके रहते हो? भले स्थूल में जो भी साथी साथ रहते हों लेकिन आपका मन तो बाबा के साथ है ना। है? थोड़ा थोड़ा टीचर्स के स्वभाव वगैरा को देख करके गड़बड़ हो जाता है। बाबा कहता है, मैंने भी तो इतनों को सम्भाला है ना, स्वभाव नहीं देखा। आपको तो कितनी मिलती हैं, चलो 20-25 ज्यादा में ज्यादा बाकी तो होते हैं 5-6 और बाबा को कितनी मिली हैं? आप भी तो मिली हो ना, आप भी तो बाबा की बनी हो ना। पक्का है ना? बाबा के बन गये हैं, पक्का का हाथ उठाओ। अरे! कुमारियों को तो देख करके बाबा इतना खुश होता है... नहीं तो क्या कुमारियों की हालत होती है! यह तो इतनी बच गयी जो भगवान की साथी बन गयी और सभी उसको किस दृष्टि से देखते हैं? वैसे कुमारी के ऊपर जो दृष्टि पड़ती है वो क्या और कैसी होती थी और अभी यह देवियाँ हैं, परमात्मा की सन्तान हैं, इन्हों के नयन मस्तक से आत्मा की लाइट दिखाई देती है। बाबा ने पहले भी कहा था कि सबको यह अनुभव होना चाहिए कि इनके अन्दर आत्मा की लाइट चमक रही है।

तो आज बाबा ने यही कहा है, जैसे मैं कार्य करता हूँ ना

वैसे टीचर्स का भी यही कार्य है। बाबा जैसा कार्य मिला है तो बाबा जैसा कार्य, जैसे बाबा करता है टीचर्स की रिपोर्ट एक ही निकलती है जो साथी हैं ना वो थोड़ा तंग करते हैं लेकिन बाबा कहते हैं। तुम्हारे साथी कितने हैं 8, 10, 12 चलो ज्यादा में ज्यादा और मेरे को कितनों को बनाना है? तो जैसे बाबा वैसे आपको भी ऐसा ही कर्तव्य करना है। बाबा कहता है बस, साक्षी हो करके अपना अपना कर्तव्य करते चलो। जैसे बाबा का काम है ना, बस विश्व को परिवर्तन करना। तो आपका भी यही काम है ना।

कई बहनें कहती हैं वैसे तो सब ठीक है लेकिन जो साथी होते हैं ना वो खिटखिट करते हैं, तो बाबा कहता है तुम्हारे साथी तो थोड़े होंगे, बाबा के कितने साथी हैं। उसमें कोई कोई तो खिटखिट भी करते होंगे लेकिन बाबा कभी भी उन्हों को यह नहीं कहते कि यह तो हैं ही ऐसे! नहीं। फिर भी मेरे हैं, तो टीचर्स में भी मेरेपन की भावना हो, बाबा के हैं सो मेरे हैं, मेरे हैं सो बाबा के हैं। लेकिन मेरे को जिम्मेवारी मिली है इन्हों को साथी बना करके स्वर्ग में ले जाना, इतनी जिम्मेवारी है। हम लोग ही इस दुनिया को परिवर्तन करके स्वर्ग बना रहे हैं। उस स्वर्ग के लायक बनना, बनाना यही टीचर्स का काम है। अभी भी देखो छोटा-सा सेन्टर का स्थान है, छोटा है लेकिन सोने का पलंग तो है, खाना तो अच्छा मिलता है, आपस में बनाके खाते तो हो! आपस में चलो खिटखिट थोड़ी होती भी है लेकिन फिर भी देखो, आपको जैसे बाबा प्यार करता है ऐसा प्यार किसको मिलता है! देखो, रोज़ बाबा मुरली में क्या कहता है? मीठे मीठे प्यारे प्यारे बच्चों को गुडमार्निंग यादप्यार और नमस्ते, कौन करता है? हमारा बाबा। जो विश्व का पिता है, विश्व जिसको याद करती है वो हमारे से रोज़ मिलता है। रोज़ मिलता है ना! भले सेन्टर्स पर आप अलग रहते हैं, मधुबन में सदा नहीं रहते हैं लेकिन आप सभी ने बाबा से एक वायदा किया है, वो याद है? बाबा मैंने आपको दिल में बिठा दिया है, तो बिठाया है? दिल में बाबा को बिठा दिया है? तो दिल की बात भूलती है क्या? तो दिल में कौन है? मेरा बाबा। और दिल में बाबा होने के कारण ऐसे अनुभव नहीं होता कि मैं अकेली हूँ, मेरे साथ बाबा है, मेरे दिल में बाबा बैठा है।

दादी जानकी और दादी गुल्जार जी की चिटचैट तथा प्रश्न-उत्तर

दादी गुल्जार:- दादी आपको देख करके बहुत खुशी हो रही है,

दादी जानकी:- आपको देख करके एक्स्ट्रा खुशी हो रही है। हम दोनों मीठे हैं लेकिन ज्यादा मीठा कौन? मैं आप मीठी दादी की बातें सुनाती रहती हूँ क्योंकि समय प्रति समय आपने ऐसी बातें सुनाई हैं जो दिल को लग गई हैं।

दादी गुल्जार:- हाँ, हर एक के दिल में बाबा की बातें कोई न कोई समाई हुई है।

दादी जानकी:- हाँ, दादी मैं भी इन्हों को हाथ जोड़के कह रही हूँ कि दिल में और कोई बात नहीं रखो। दिल में एक दिलाराम ही रहे, यह मेरी भावना है, दिल में कुछ नहीं रखो।

दादी गुल्जार:- सभी टीचर्स आज अमृतवेले बाबा का प्यार लिया, मिलन मनाया? बाबा हरेक को इमर्ज करके बहुत प्यार करता है दिल में। तो दिल का प्यार जहाँ मिला वहाँ सब कुछ मिला। सभी खुश हो रहे हैं और सदा खुश रहेंगे। ठीक है ना! यहाँ खुशी की खुराक खाके जाते हैं और मुरली द्वारा सदा खुशी की खुराक मिलती रहती है। सारे दिन में खुशी कम भी हो तो मुरली भर देती है और रात्रि को खुशी खुशी से बाबा से गुडनाइट करके सो जाते हैं। सुबह को उठते ही मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा.. तो बाबा भी कहता है कि मेरे दिल में बच्चे हैं और बच्चों के दिल में बाबा है। अभी बाबा कहता है, ऐसा पॉवरफुल योग करो जो सभी को आवाज़ पहुँच जाए घर बैठे, कोई आया है, कोई आया है और ढूँढें कौन आया है? और ढूँढते-ढूँढते सब पहुँच ही जायेंगे क्योंकि प्रत्यक्ष तो होना ही है। तो बोलो टीचर्स और सब कुमारियाँ देख-देख खुश हो रहे हैं ना? तो बाबा कहते हैं, अभी टीचर्स का काम है विश्व को जगाना, विश्व की आत्मायें बाबा को भूल गयी हैं, सबके मुख में यही आवे मेरा बाबा, मेरा बाबा, मेरा बाबा। जैसे हम जिगर से कहते हैं मेरा बाबा, मीठा बाबा ऐसे हरेक के मुख से निकले मेरा बाबा, मीठा बाबा। इसके लिए ही बाबा मधुबन में बुलाके रिफ्रेश करता है, जो रिफ्रेश होके पॉवर भरके वहाँ अपने स्थान पर जाके सेवा करेंगे तो आवाज़ फैलेगा। तो बोलो, जो आपने भट्ठी की, उसमें विशेषतायें कितनी थी और कितनी अपने में विशेषतायें भरी? हर एक टीचर जो निमित्त बनी है, उनसे आपको ताकत मिली और स्पष्ट भी हुआ। अब फ्री। तो जैसे हम बहुत प्यार से कहते हैं मेरा बाबा, ऐसे सारी दुनिया

कहे कि मेरा बाबा यह है। ठीक है ना। अच्छा - ओम् शान्ति।

प्रश्न:- कर्मातीत बनना है तो कर्मातीत स्थिति की अनुभूति क्या है?

उत्तर:- कर्मातीत अवस्था की अनुभूति यह है जो कर्म कितना भी करें, पहले से ज्यादा भी करें लेकिन कर्म करते महसूस नहीं होगा, थकावट या कोई बातें बीच में आती हैं, वो ऐसे लगेंगी जैसे कुछ नहीं है। अपने ही मस्ती में जो कार्य किया है वो खुशी खुशी से सम्पन्न करेंगे और सम्पन्न करके उन्हों को आगे बढ़ायेंगे।

प्रश्न:- आप इतनी गहरी साइलेंस में जो रहती हैं उस साइलेंस में रहने का राज़ और उसकी चाबी हम सभी को भी दे दें जो सब कारोबार करते भी हम इतनी गहरी साइलेंस में रह सकें?

उत्तर:- इसके लिए तो मैं आत्मा हूँ, शरीर से काम कराने वाली हूँ, यह स्मृति मैं कराने वाली यह शरीर करने वाला है... तो क्या होगा शरीर का कोई भी प्रभाव जो है वह मेरे ऊपर नहीं आयेगा लेकिन मेरा प्रभाव कर्म पर पड़ेगा। मेरा प्रभाव कर्म पर पड़ने से कर्म बहुत अच्छा सफल और सहज होगा।

प्रश्न:- बाहर का वायुमण्डल दिन प्रतिदिन बिगड़ता जा रहा है, अशान्त और दु:खी हो रहा है और सेन्टर के वायुमण्डल के लिये बाबा बार-बार कहते वायुमण्डल बहुत शक्तिशाली हो, शान्तिकुण्ड बनें उसके लिए हम अपनी कौन-सी स्थिति को श्रेष्ठ बनायें?

उत्तर:- इसके लिए हमारा तो ऐसा प्लान है कि हर कार्य के समय क्योंकि कार्य तो बदलता ही है तो हर कार्य करते, वैसे निश्चित समय और कार्य भी है तो कोई न कोई खास विशेष टॉपिक अपनी बुद्धि में रखें और प्रोग्राम बनायें, कि आज इस टॉपिक के ऊपर विशेष अनुभव करूँगी। अपनी दिनचर्या को फिक्स करके और यह थोड़ा सेट कर देवें फिर ऑटोमेटिकली पीछे चलता रहेगा। हर कार्य के लिए समझो, जैसे सुबह अमृतवेले का हमारा बना हुआ है हमको बाबा के पास जाना है, बाबा से शक्ति लेनी है और दुनिया को भी शक्ति देनी है। तो ऐसे समझो कोई भी कार्य हम करते हैं, दिनचर्या तो हरेक को पता है, तो हर कार्य के लिए अपनी सेटिंग चाहिए, इस समय यह सोचूँगी, अनुभव करूँगी। ऐसे दूसरे टाइम यह करूँगी, यह दिनचर्या रोज़ अपनी अलग-अलग बनानी चाहिए और रात को अटेन्शन देके देखना चाहिए कि जो मैंने सोचा वो हुआ? अगर विघ्न आया तो विघ्न को मिटाने की शक्ति मेरे में आयी या नहीं आयी? नहीं आयी तो कितना टाइम वो विघ्न चला? इतना टाइम नहीं चलना चाहिए। इसके लिए अपनी चेकिंग बहुत अच्छी चाहिए और दिनचर्या फिक्स चाहिए। तो उस अनुसार अपने को चेक करके रात्रि को बाबा के आगे रिजल्ट रखो।

प्रश्न:- बापदादा पिछले 3-4 वर्षों से निर्विघ्न स्थिति, निर्विघ्न सेवास्थान, निर्विघ्न वायुमण्डल हो... तो निर्विघ्न स्थिति और निर्विघ्न सेवास्थान के लिए विशेष हम किस बात का अटेन्शन रखें?

उत्तर:- निर्विघ्न बनने के लिए पहले अपनी निर्विघ्न अवस्था चाहिए। कोई न कोई छोटी मोटी बात हमारे दिल में है तो नहीं? क्योंकि साथियों के साथ भी रहना है, स्टूडेन्ट्स से भी चलना है, सबसे निभाना है, तो पहले अपनी चेकिंग करें कि अपने मन में मैं निर्विघ्न हूँ? मैं निर्विघ्न नहीं हूँ, कोई विघ्न है तो पहले उसको बाबा को दे देना, अपने को निर्विघ्न बनाके फिर औरों को भी ऐसे निर्विघ्न बना सकते हैं। अच्छा। ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

बुद्धि को श्रीमत रूपी लॉक लगाने वाला ही लकी है

मीठे बाबा ने हम बच्चों को इस बेहद झाड़ की जड़ में राजयोगी बनाकर बिठाया है – नव निर्माण के लिए। हमें इस जड़ में याद की शक्ति का, पवित्रता की शक्ति का जल डालना है। बाबा ने हमें सारे विश्व के नव निर्माण की नींव पर रखा है। जब कोई मकान बनाते हैं तो उसका पहला आधार नींव पर रहता है। जितना फाउन्डेशन पक्का होगा उतनी ऊंची इमारत का प्लैन बनायेंगे। वह पैगम्बर कोई मकान के फाउन्डेशन नहीं, वह तो मरम्मत करने वाले हैं। लेकिन हमें तो नई दुनिया के नव निर्माण के लिए फाउन्डेशन में बाबा ने अन्दर रखा है। हमारा बाबा है फाउन्डर, उसने हमें फाउन्डेशन में रखा है और कहा इसमें योग का बीज डालो, पवित्रता का बीज डालो और इस ज्ञान की शक्ति से इस इमारत को मजबूत करो।

एक तरफ हम नींव हैं दूसरे तरफ हमें बाबा का पैगाम देना है कि बाप आया है – नव निर्माण करने। हमें बाबा ने सन्देशी बनाया है कि चारों तरफ मेरा सन्देश दो। एक तरफ हम राजयोगी, पवित्रता का दान देने वाले योगी बच्चे हैं, हमारा योग ही सहयोग है। पवित्रता ही हमारा सहयोग है। यही हम बाप को नव निर्माण के लिए सहयोग देते हैं। हम नव निर्माण के आधार हैं। हमारे

आधार पर ही सृष्टि का उद्धार होना है। दूसरा हम पैगम्बर हैं।

वह पैगम्बर आते हैं अपना धर्म स्थापन करने और हम कल्प के आदि में आये अभी फिर जा रहे हैं। अभी हम ऐसी नींव डाल रहे हैं जो 21 जन्म तक हमारा मकान सदा सजा सजाया रहे। तो हरेक ऐसी अपनी जवाबदारी समझते हो कि हम इस जड़ में बैठे हैं? अपनी कूट-कूट कर नींव पक्की कर रहे हैं? हमारा फाउन्डेशन है बुद्धियोग, नींव है याद की यात्रा। अगर हम नींव डालने वालों की बुद्धि भटकती है तो मकान का क्या होगा! अगर नींव डालने वाले, नींव डालते-डालते इधर-उधर चले जायें तो उस नींव का क्या होगा! हम सभी नींव में हैं, कहते भी हैं बाबा हम आपके हैं। हमें तो सर्विस की बहुत धुन है। लेकिन बुद्धि को बाहर भटकाते, तो वह नींव हिलेगी या मजबूत होगी? अगर नींव में बैठे-बैठे निकल जाते तो उसके लिए बाबा कहता - तुम्हें 100 गुणा दण्ड मिलेगा। अगर आज कोई कान्ट्रेक्टर लिखा पढ़ी करके कान्ट्रेक्ट ले और पीछे धोखा दे तो उस पर केस चल जाता। आप ने भी बाबा के लेज़र में नाम लिखाया, फार्म भरा अब कहो मैंने तो यह सोचा ही नहीं था कि फार्म भरा माना फंस गये। सोच कर फंसे ना! अच्छाई के लिए फंसे ना! बाप के प्यार में फंस गये। ठेका ले लिया ना! अब निकलेंगे भी तो कहाँ जायेंगे। हट्टी तो एक ही है। भागे तो भागे कहाँ! कोई रास्ता नहीं, लॉक लग गया है। जिसको लॉक लगा वही लकी है, हम बाबा की लॉक के अन्दर हैं माना श्रीमत के अन्दर हैं, हमारा लॉक है श्रीमत।

बाबा ने हमें पैगम्बर बनाया है, परन्तु पैगम्बर कभी-कभी कहते मेरा माइन्ड डिस्टर्ब है। हूँ मैं निर्माण करने वाला लेकिन खुद का निर्माण करना मुझे नहीं आता। तो हम समझें कि हम दूसरों के लिए पंडित हैं। स्व से सृष्टि का निर्माण होगा या सृष्टि से स्व का? तो हरेक चेक करो कि मैं स्व का निर्माण कर रहा हूँ? क्या निर्माण करने वाला कभी बिगड़ेगा? अगर मैं बिगड़ गई तो क्या मैं बिगड़ी को बनाने वाली हुई या बनी हुई को बिगाड़ने वाली? उस टाइम मैं पैगम्बर कौन सा संदेश सबको देती? बिगड़ने का या निर्माण करने का? कईयों का मूड एकरस से निकल कर ऑफ हो जाता। यह कितनी अच्छी बात है। उस समय हमारी सूरत से कौन-सा पैगाम मिलता है? नव-निर्माण का? कई कहते मेरे में देह-अभिमान बहुत है। पर बाबा तो जानता है ना कि हैं ही सब देह-अभिमानी। मैं इन गिरी हुई आत्माओं को ही देही-अभिमानी बनाने आया हूँ। फिर बाबा को क्यों कहते – मेरे में देह-अभिमान है! अगर सर्जन को कोई पेशेन्ट कहे हे सर्जन मेरी तो वही बीमारी है, तो यह भी उसकी इन्डायरेक्ट इन्सल्ट हुई ना। अगर कहते मेरे में वही का वही देह-अभिमान है, तो बाबा का मैंने कितना रिस्पेक्ट किया! यही पढ़ाई की रिजल्ट सुनाई?

बाबा ने पढ़ाया देही-अभिमानी बनो, हम जवाब देते हमारे में देह-अभिमान है। तो क्या यही प्यार का जवाब है? अगर अभी तक मेरे में वही देह-अभिमान है तो शूद्र कुमार और ब्रह्माकुमार में अन्तर ही क्या रहा? फिर कहेंगे आप जो भी समझों। तो मैं समझूँ तू राजयोगी नहीं हो ना!

कहते हैं बाबा मुझे और कुछ नहीं चाहिए सिर्फ मुझे सभी प्यार से चलायें। मैं पूछती बाबा प्यार का सागर है, क्या वो प्यार नहीं दे रहा है, उनसे ज्यादा और कोई प्यार देने वाला है? चलाने वाला बाबा या हम-तुम? प्यार का सागर हमें प्यार से पाल रहा है। हमें नया जन्म दिया, वर्सा दे रहा है, हम उसकी पालना के अन्दर हैं, वह हमें अति प्यार से इस पुरानी दुनिया से नई दुनिया में ले चलता। कितनी बार कहता ओ मेरे मीठे मीठे बच्चे, यह कितने प्यार के बोल हैं। बाबा ने यह बोल सबके लिए बोला है या एक दो के लिए? तुम किसको बोलते कि हमें प्यार से चलाओ? किसको अक्ल सिखाते हो?

बाबा ने हमें मंत्र दे दिया - जो देखते हो वह न देखो, जो न दिखाई देता है उसे याद करो। भिन्न-भिन्न संस्कार तो कर्मों का हिसाब-किताब है। मुझे कर्म का खाता चुक्तू करना है ना कि बनाना है। मैं सब हिसाब-किताब चुक्तू करने, कर्मातीत बनने के लिए बैठी हूँ फिर मैं अपना हिसाब-किताब संस्कारों के वश क्यों बनाऊं!

अगर हम हर घड़ी यही समझें कि हम स्टेज पर हैं, अगर कोई स्टेज पर बैठ मूड आफ करे, रोता रहे तो वह सबको अच्छा लगेगा? उस समय मुझे सबसे प्यार मिलेगा? स्टेज पर बैठकर रोओ तो सब देखें कि मैं बी.के. कितना दु:खी हूँ, मैं कितना उदास हूँ! जब गुस्सा आता है तो स्टेज पर जाकर गुस्सा करो, सब देखें मेरा चेहरा कैसा है। मैं सुन्दर हूँ या काला हूँ! हूँ तो मैं पैगम्बर लेकिन क्रोध वाला हूँ। रोने वाला हूँ। शायद यह गुस्सा भी मेरी सर्विस करे? फिर देखने वाले कहते - इनका यही प्रैक्टिकल का ज्ञान है! कहते हैं मेरी वृत्ति दृष्टि खराब होती है, मैं कहती तू खराब हो। बाबा हमें काले से गोरा बनाता फिर कहते दृष्टि खराब होती। खराब रावण है या राम? राम का होकर रहो। अगर सीता कहे मेरी तो वृत्ति खराब हो जाती तो राम पसन्द करेगा? राम के बच्चे होकर मेरी खराब वृत्ति जाती! लज्जा नहीं आती? फिर कहते क्या करें, संग ऐसा है तो जरूर रावण का संग है, बाप का तो नहीं है। हम अन्धों को बाबा ने लाठी दी, तीसरा नेत्र दिया। अब हम पुराने नहीं, हमारा पुराना जन्म खत्म हुआ, जब हमारा नया जन्म, हम नयी स्थापना में हैं फिर क्यों कहते हमारा तो पुराना संस्कार है। हमेशा समझो हम नयी स्थापना करने वाले, नये अधिकारी हैं, नया राज्य लेने वाले हैं। जब न्यू बर्थ हो गया तो पुराना हिसाब-किताब समाप्त हुआ। ज्ञान कहता है सब बातों से प्रूफ हो जाओ। गुस्सा, उदासी, गन्दी वृत्ति सबसे प्रूफ। जब प्रूफ होंगे तो बाबा को प्रूफ दे सकेंगे। बाबा के सपूत बच्चे कहलायेंगे। अच्छा। ओम् शान्ति।